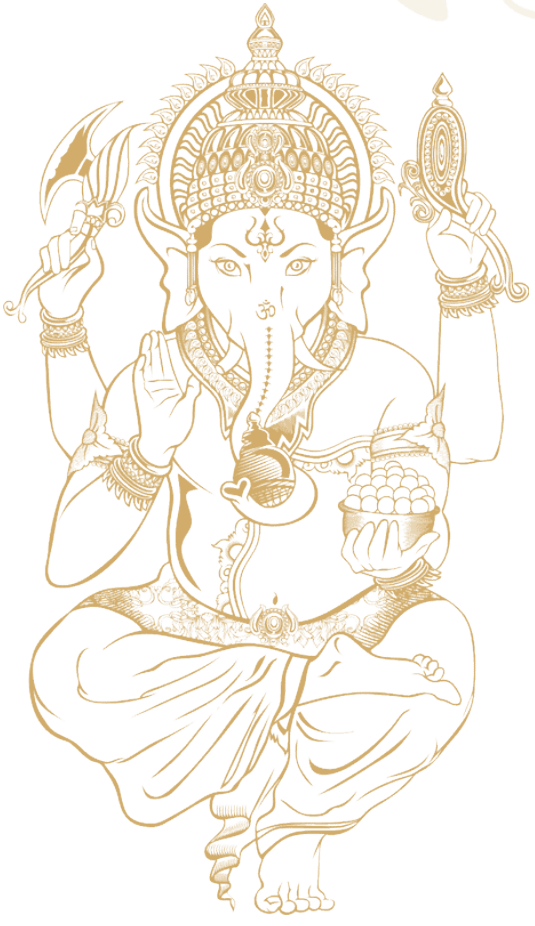

Mr. Shriyank

Ms.pragya gondia

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119906603

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/03/1995	जन्म तिथि	27-28/12/1998
शुक्रवार	दिन	रवि-सोमवार
घंटे 17:17:00	जन्म समय	01:24:50 घंटे
घटी 27:49:40	जन्म समय(घटी)	46:29:44 घटी
India	देश	India
Katni	स्थान	Gondia
23:47:00 उत्तर	अक्षांश	21:23:00 उत्तर
80:29:00 पूर्व	रेखांश	80:14:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:08:04	स्थानिक संस्कार	-00:09:04 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:09:07	सूर्योदय	06:45:05
18:19:56	सूर्यास्त	17:35:02
23:47:36	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:24

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शुक्र 12वर्ष 10मा 24दि	25:53:37	सिंह	लग्न	कन्या	29:21:59	केतु 6वर्ष 11मा 14दि
मंगल	09:34:42	मीन	सूर्य	धनु	12:01:01	शुक्र
16/02/2024	18:03:57	धनु	चंद्र	मेष	00:04:56	12/12/2005
16/02/2031	19:22:20	कर्क व	मंगल	कन्या	22:27:21	12/12/2025
मंगल 15/07/2024	20:53:53	कुंभ	बुध	वृश्चि	21:45:56	शुक्र 12/04/2009
राहु 02/08/2025	21:29:21	वृश्चि	गुरु	कुंभ	27:30:37	सूर्य 12/04/2010
गुरु 09/07/2026	01:45:16	कुंभ	शुक्र	धनु	26:18:49	चन्द्र 12/12/2011
शनि 18/08/2027	23:27:44	कुंभ	शनि व	मेष	02:55:51	मंगल 10/02/2013
बुध 14/08/2028	12:16:05	तुला व	राहु व	कर्क	29:25:26	राहु 11/02/2016
केतु 10/01/2029	12:16:05	मेष व	केतु व	मक	29:25:26	गुरु 12/10/2018
शुक्र 12/03/2030	05:57:40	मक	हर्ष	मक	16:54:13	शनि 12/12/2021
सूर्य 18/07/2030	01:25:58	मक	नेप	मक	07:04:14	बुध 11/10/2024
चन्द्र 16/02/2031	06:41:39	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	15:07:37	केतु 12/12/2025

लग्न-चलित

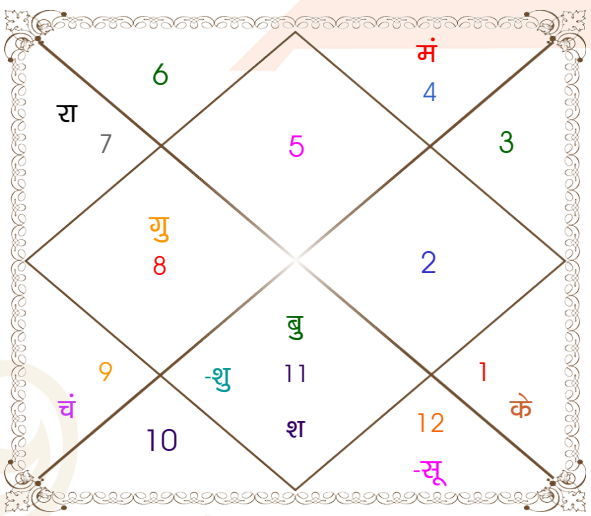

लग्न-चलित

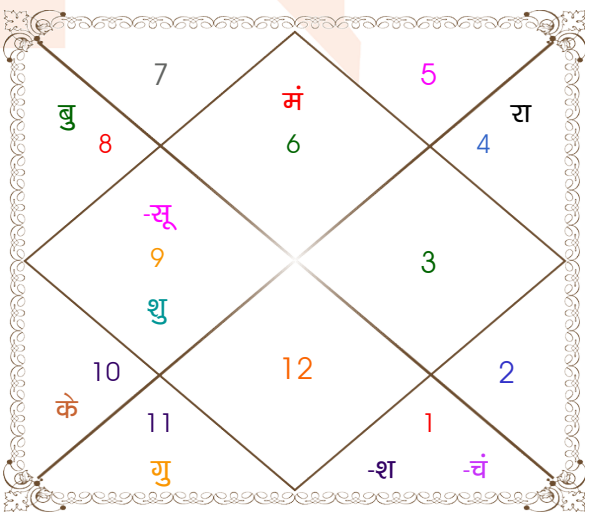

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	वानर	अश्व	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	मेष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतण्ौतपलंदा का वर्ग सर्प है तथा डेण्चतंहलं हवदकपं का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्ौतपलंदा और डेण्चतंहलं हवदकपं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्ौतपलंदा मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण्ौतपलंदा कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण्ौतपलंदा कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्चतंहलं हवदकपं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डेण्चतंहलं हवदकपं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डतण्ौतपलंदा कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्ौतपलंदा तथा डेण्चतंहलं हवदकपं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।